

धनि साध शास्त्र अभय दिवैया, त्याग राग विरोध को।
बिन दान श्रावक साधु दोनों, लहैं नाहीं बोध को॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह चौबिस भेद, त्याग करें मुनिराजजी।

तिसना भाव उछेद, घटती जान घटाइए॥

उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह-चिन्ता दुख ही मानो।
फाँस तनक-सी तन में सालै, चाह लँगोटी की दुख भालै॥
भालै न समता सुख कभी नर, बिना मुनि-मुद्रा धरैं।
धनि नगन पर तन-नगन ठाढ़े, सुर-असुर पायनि परैं॥
घर माहिं तिसना जो घटावे, रुचि नहीं संसार सौं।
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर-उपगार सौं॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमाकिंचन्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शील-बाढ़ नौ राख, ब्रह्म-भाव अन्तर लखो।

करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नर-भव सदा॥

उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ।
सहैं बान-वरषा बहु सूरै, टिकै न नैन-बान लखि कूरै॥
कूरै तिया के अशुचि तन में, काम-रोगी रति करैं।
बहु मृतक सड़हिं मसान माहीं, काग ज्यों चोंचैं भरैं॥
संसार में विष-बेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा।
'द्यानत' धरम दश पैड़ि चढ़ि कै, शिव-महल में पग धरा।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

दश लच्छन वन्दौं सदा, मनवांछित फलदाय।

कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय॥

(चौपाई)

उत्तम छिमा जहाँ मन होई, अन्तर-बाहिर शत्रु न कोई ।
उत्तम मार्दव विनय प्रकासे, नाना भेद ज्ञान सब भासे ॥
उत्तम आर्जव कपट मिटावे, दुर्गति त्यागि सुगति उपजावे ।
उत्तम शौच लोभ-परिहारी, सन्तोषी गुण-रतन भण्डारी ॥
उत्तम सत्य-वचन मुख बोले, सो प्रानी संसार न डोले ।
उत्तम संजम पाले ज्ञाता, नर-भव सफल करै, ले साता ॥
उत्तम तप निरवांछित पाले, सो नर करम-शत्रु को टाले ।
उत्तम त्याग करे जो कोई, भोगभूमि-सुर-शिवसुख होई ॥
उत्तम आकिंचन व्रत धारे, परम समाधि दशा विसतारे ।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावे, नर-सुर सहित मुकति-फल पावे ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्येति
दशलक्षणधर्माय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

करै करम की निरजरा, भव पींजरा विनाशि ।
अजर अमर पद को लहैं, 'द्यानत' सुख की राशि ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

देखो जी आदीश्वर स्वामी, कैसा ध्यान लगाया है ।
कर ऊपर कर सुभग विराजै, आसन थिर ठहराया है । टेक ॥
जगत विभूति भूति सम तजकर, निजानन्द पद ध्याया है ।
सुरभित श्वासा आशा वासा, नासा दृष्टि सुहाया है ॥१॥
कंचन वरन चले मन रंच न सुर-गिरि ज्यों थिर थाया है ।
जास पास अहि मोर मृगी हरि, जाति विरोध नशाया है ॥२॥
शुध-उपयोग हुताशन में जिन, वसुविधि समिध जलाया है ।
श्यामलि अलकावलि सिर सोहे, मानो धुआँ उड़ाया है ॥३॥
जीवन-मरन अलाभ-लाभ जिन, सबको नाश बताया है ।
सुर नर नाग नमहिं पद जाके, 'दौल' तास जस गाया है ॥४॥